प्रकाशनार्थ।

12 सितंबर, गोरखपुर - कथा।

युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ की 53वीं तथा राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ की 8वीं पुण्यतिथि पर साप्ताहिक समारोह के अंतर्गत चल रहे सप्त दिवसीय श्री राम कथा का तात्विक विवेचन के छठे दिन कथा व्यास अशर्फी भवन अयोध्या के पीठाधीश्वर अनंत श्री विभूषित जगतगुरु रामानुजाचार्य श्री श्रीधराचार्य जी महाराज ने व्यास मंच से कहा कि

स्थान की बहुत महिमा होती है। गोरक्षपीठ जहां के संतों की एक सुदीर्घ परंपरा रही है । जहां पर भगवान महादेव आर्यावतार रूप में, गोरखनाथ जी की प्रतिमा के रूप में विराजमान हैं। ऐसी सिद्ध पीठ जहां योग विद्या की ऊर्जा का संचार होता रहता है, ऐसे स्थान पर भगवान श्री राम ।कथा का श्रवण परम कल्याणकारी होगा। गोरक्षपीठ की एक और विशेषता है कि यहाँ गौ सेवा तथा गोरक्षा का प्रति वर्ष संकल्प लेकर अधिकाधिक क्रियान्वित किया जाता है ।

उन्होंने "जन जन का कल्याण करेंगी गौ माता" भजन सुना कर गौ सेवा के महत्व को बताते हुए कथा व्यास ने कहा कि भगवान राम के जन्म के दिन भी अयोध्या में गौ माता की विधिवत पूजा की गई थी। गौ के घी से यज्ञ करने पर वातावरण शुद्ध होता है तथा यज्ञ मेघ बनकर दृष्टि करते हैं। गो घृत से यज्ञ करने से सभी देवता प्रसन्न होते है। हम सभी के जीवन में यज्ञ का संपादन करने में गौ और ब्राह्मण का बहुत महत्व है। गाय व ब्राह्मण के शरीर में साक्षात ईश्वर होता है, इनकी पूजा करने से भगवान प्रसन्न होते हैं। योगी जान जिनका चिंतन करें ,मनन करें ,उपासना करें उसी रूप का नाम राम है। भगवान लीला के लिए राम के रूप मे अवतार लेते है। प्रभु श्री राम लोकाभिराम है।संसार का कोई जीव जंतु भी जिनके चिंतन मनन में शुष्क होकर रुदन करे वही प्रभु श्रीराम हैं । जिनका वध भगवान अपने हाथों से करते हैं वे भी भगवान की महिमा का गान करते हुए प्राण त्यागते है। भगवान जब

पंचवटी में रहते हैं उस समय पशु पक्षियों का उनके प्रति प्रेम का वर्णन रामायण में किया है। भगवान के प्रति भरत का प्रेम अचिदवत् प्रेम होता है ,स्वयं को जड़ भाव के रूप में मानकर आराध्य को चेतन मानना ही अचित अर्थात जड़वत प्रेम है।भक्त अपना सर्वस्व भगवान के चरणों में मानकर उनकी भक्ति को अपने जीवन का एकमात्र प्रयोजन बना लेता है, यही दशा भरत की प्रभु श्रीराम के प्रति रही । इसलिए रामायण में भरत की भक्ति को श्रेष्ठ भक्ति बताई गई है। ऐसी अवस्था के भक्तों को अपनी चिंता नहीं रहती ,भगवान स्वयं ही भक्तों की चिंता करते हैं।पंचवटी में भगवान भरत को उसी तरह याद करते हैं। तभी पंचवटी में घूमते घूमते सूपनखा आजाती है और वह प्रभु को देखकर मोहित हो जाती है । भगवान उसका परिचय पूछते हैं तो बताती है कि वह रावण की बहन है। वह झूठ बोलती है कि मेरा विवाह नहीं हुआ, आप मुझसे विवाह कर लीजिए  भगवान उसको समझाते हैं कि तुम राजकुमारी हो तुम मेरी पत्नी सीता के साथ कैसे रहोगी तुम मेरे भाई लक्ष्मण के पास जाओ उसके साथ रहो। लक्ष्मण के पास जाती है लक्ष्मण कहते हैं कि मैं तो उनका सेवक हूं ,मेरे पास तुम को दसी कर रखना पड़ेगा। रामजी राजा उनके पास रानी बनकर रहोगी उन्हीं के पास जाओ । वह नहीं मानती है और सीता जी पर आक्रमण करना चाहती है तो उसका नाक कान काट देते हैं। वह रोते-रोते खर दुषन  के पास जाती है। यह देखकर खर दूषण युद्ध के लिए आते हैं भगवान उन सब का वध कर देते हैं और फिर वह रोते-रोते लंका जाती है।

"राम का नाम लेकर जो मर जाएगा, यह न पूछो कि मरकर किधर जाएगा" कथा व्यास ने भजन सुनाकर भक्तों को मंत्रमुग्ध कर दिया। भगवान का स्वरूप रमणीय है, ऐसी रमणीयता है कि सूपनखा अपने नाक कान काटने पर भी उनके सुंदरता का ही वर्णन रावण के सामने करती है। यही राम जी का अभिराम गुण है कि शत्रु  भी उनकी सुंदरता का गुणगान करता है। रावण क्रोधित होकर मारीच को बुलाता है तो मारीच उसको बताता है कि वह राम सामान्य बनवासी नहीं है स्वयं परब्रह्म

परमात्मा है,उनके विपरीत जाना अमंगलकारी ही होगा। आप उनसे शत्रुता न करें किंतु अभिमानी रावण क्रोध में आकर  कहता है कि नहीं जाओगे तो मैं तुम्हें मार डालूंगा। दोनों तरफ मरण देखकर मारीच भगवान के हाथों मरना स्वीकार करता है।

" प्रभु के करुणा में कोई कमी है नहीं ,पात्रता में हमारी कमी रह गई।" भजन गाकर कथा व्यास में ईश्वर के करुणा का वर्णन किया।

भगवान से जानकी जी का तीन बार वियोग होता है किंतु तीनों का अलग-अलग प्रयोजन रहा है। रावण के द्वारा हरण होने पर जो वियोग होता है उसका प्रयोजन दुष्ट रावण को समझाने के लिए उसके साथ जाती है जैसे कोई मां अपने बालक को दलदल में जाते देख कर स्वयं उसमें कूद कर बचाना चाहती है। दूसरा वियोग तब होता है जब लोकापवाद के कारण सीता को वन में छोड़ा जाता है उसका प्रयोजन रामायण में बताया गया है कि सीताजी गंगा तट पर तपस्या करने वाले ऋषि मुनियों के दर्शन कराने  के लिए उनको ले जाकर लखनलाल छोड़ वन में छोड़ते है। तीसरा वियोग तव होता है जब नैमिषारण्य में भगवान यज्ञ करते हैं वहां  वाल्मीकि जी के साथ सीता जी आती हैं महर्षि वाल्मीकि सीता जी के लिए भगवान से निवेदन करते हैं। रामजी ने कहा कि मैं इन प्रजा जन के कहने पर ही सीता का त्याग किया था  आप प्रजा जन से पूछ लीजिए यदि वे कहे तो मैं स्वीकार कर लूंगा ।  इस पर की सीताजी माता पृथ्वी का आह्वान करती हैं और पृथ्वी फट जाती है सीता जी उसमें समाहित हो जाती है। इसका प्रयोजन जीवो के प्रति भगवान का सद्भाव प्रदर्शित करना रहा।

कथा का प्रारंभ व्यास मंच की पूजन से तथा समापन आरती और प्रसाद वितरण से हुआ। संचालन डॉ श्री भगवान सिंह ने किया।

इस अवसर पर प्रमुख रूप से  गोरखनाथ मंदिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ जी यजमान अवधेश सिंह , बृजेश मणि त्रिपाठी,  विनय गौतम आदि उपस्थित रहे।